व्यष्टि-समष्टि मिश्रण
[Micro-Macro Mix]

[बहु-अनुशासनात्मक प्रश्न-उत्तर, व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र का समाकलन
(Multidisciplinary question-answer, integrating micro & macro economics)]

यूनिट-1

1. एक अर्थव्यवस्था में केवल गेहूँ एवं कपास की खेती होती है। सभी कृषकों द्वारा अधिक कुशल खेती के तरीकों को अपनाया गया है। यह (i) एक व्यक्तिगत कृषक के PPC तथा (ii) संपूर्ण अर्थव्यवस्था के PPC को कैसे प्रभावित करेगा? रेखाचित्र का प्रयोग करें।

उत्तर: सभी कृषकों द्वारा गेहूँ एवं कपास की खेती के लिए अधिक कुशल खेती के तरीकों को अपनाया गया है। तदनुसार, एक व्यक्तिगत कृषक के साथ-साथ संपूर्ण अर्थव्यवस्था के लिए उत्पादन संभावना वक्र (PPC) दाईं ओर खिसक जाएगा, जैसा कि चित्र 1 में दिखाया गया है।

चित्र 1

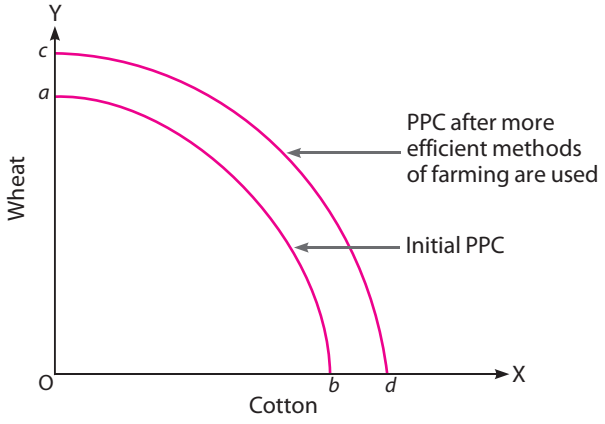

2. एक देश में केवल एक ही तेल कंपनी है जो कच्चे तेल की पूर्ति को नियंत्रित करती है। यह कंपनी नए तेल कूपों (तेल-क्षेत्रों) तथा नई तकनीक को ढूँढ़ (खोज) निकालती है। परिणामस्वरूप, अर्थव्यवस्था में संभावित उत्पादन स्तर दो गुना हो जाता है। आप इस परिवर्तन को एक PPC रेखाचित्र पर कैसे प्रतिबिंबित करेंगे?

उत्तर: प्रारंभिक PPC (चित्र 2) दर्शाता है कि अर्थव्यवस्था 50 मिलियन बैरल डीजल तथा 70 मिलियन बैरल पेट्रोल का उत्पादन (कच्चे तेल की दी हुई पूर्ति का प्रयोग करके) कर सकती है। नए तेल कूपों (तेल-क्षेत्रों) तथा नई तकनीक की खोज के पश्चात, संभावित उत्पादन स्तर 'दो गुना' हो जाता है। तदनुसार, PPC दाईं ओर खिसकता है, जो 100 मिलियन बैरल डीजल तथा 140 मिलियन बैरल पेट्रोल के संभावित उत्पादन को प्रकट करता है।

चित्र 2

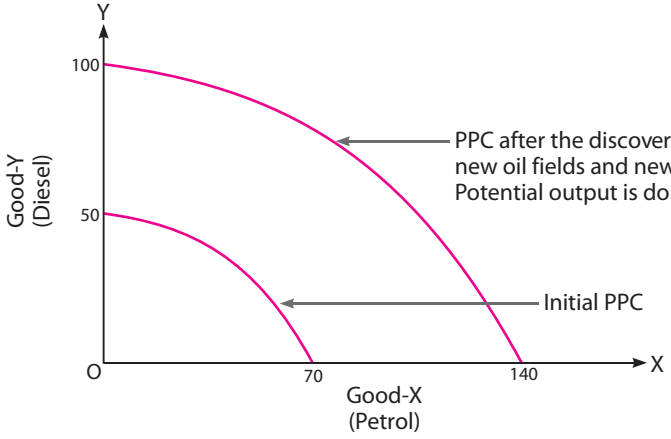

3. अर्थव्यवस्था में अनेकों व्यक्तिगत फर्मों के वास्तविक उत्पादन का स्तर उनके संभावित उत्पादन स्तर से कम है। ऐसी स्थिति में, क्या यह संभव है कि संपूर्ण अर्थव्यवस्था के लिए उत्पादन का वास्तविक स्तर उत्पादन के संभावित स्तर के बराबर हो?

उत्तर: नहीं। जब अर्थव्यवस्था में अनेकों फर्में अकुशल रूप से कार्य कर रही होती हैं (क्योंकि उनके वास्तविक उत्पादन संभावित उत्पादन से कम है) तो संपूर्ण अर्थव्यवस्था में संसाधनों के कुशल प्रयोग की संभावना नहीं की जा सकती है। इसलिए समष्टि स्तर पर भी, वास्तविक उत्पादन संभावित स्तर से कम होगा। अन्य शब्दों में, अर्थव्यवस्था PPC के अंदर कार्य करेगी, ना कि PPC पर।

4. सरकार की कर नीति अप्रत्यक्ष कराधान (प्रतिगामी कराधान) से प्रत्यक्ष कराधान (प्रगतिशील कराधान) की ओर एक बड़े बदलाव को दर्शाती है। यह किस प्रकार 'किसके लिए उत्पादन किया जाए' की केंद्रीय समस्या को प्रभावित करेगी?

उत्तर: अप्रत्यक्ष कराधान (प्रतिगामी कराधान) से प्रत्यक्ष कराधान (प्रगतिशील कराधान) की ओर एक बड़े बदलाव के कारण आय का वितरण अधिक न्यायपूर्ण हो जाता है।

5. उच्च अवसर लागत के कारण, एक क्षेत्र में कृषक कपास की खेती (जो निर्यातों के लिए की जाती है) से चावल की खेती (जो घरेलू उपभोग के लिए की जाती है) की ओर भूमि के उपयोग को परिवर्तित करने को तैयार नहीं हैं। लेकिन सरकार इस भूमि को अधिग्रहित करती है तथा इसका उपयोग चावल की खेती करने के लिए करती है। क्या आप सोचते हैं कि सरकार ने एक तर्कसंगत निर्णय लिया है?

उत्तर: कृषकों से भूमि को अधिग्रहित करना (प्राप्त करना) और उसका उपयोग चावल के उत्पादन के लिए (कपास की बजाय) करना वास्तव में सरकार द्वारा लिया एक तर्कसंगत निर्णय है। क्योंकि चावल की आवश्यकता घरेलू उपभोग के लिए और लोगों की खाद्य सुरक्षा के लिए होती है। निस्संदेह, समाज के दृष्टिकोण से यह निर्णय तर्कसंगत है, कृषकों के दृष्टिकोण से नहीं।

6. माइक्रोसॉफ्ट कॉरपोरेशन (यू०एस०ए०) भारतीय अर्थव्यवस्था में एक बड़ा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश करने की योजना बनाती है। क्या आप सोचते हैं कि यह हमारे सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि को बढ़ा देगा तथा समष्टि-स्तरीय PPC को परिवर्तित कर देगा?

उत्तर: माइक्रोसॉफ्ट कॉरपोरेशन (यू०एस०ए०) द्वारा भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश करने से निश्चित रूप से हमारे सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि होगी क्योंकि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भारत की घरेलू सीमा के अंदर किया जाता है। इस निवेश के कारण समष्टि-स्तरीय PPC में भी दाईं ओर खिसकाव होगा जो संभावित उत्पादन के उच्च स्तर को प्रकट करता है।

यूनिट-2

1. सरकार वरिष्ठ नागरिकों के लिए वृद्धावस्था पेंशन प्रदान करती है। एक औसत वरिष्ठ नागरिक मुद्रा आय में वृद्धि प्राप्त करता है। तटस्थता वक्र (IC) विश्लेषण के संदर्भ में यह कैसे उसके संतुलन को प्रभावित करेगा?

उत्तर: एक औसत वरिष्ठ नागरिक की मुद्रा आय में वृद्धि होने के परिणामस्वरूप उसकी बजट रेखा दाईं ओर खिसक जाएगी। वह अब उच्च तटस्थता वक्र (IC) पर संतुलन प्राप्त करेगा और संतुष्टि का उच्च स्तर प्राप्त करेगा।

चित्र 3

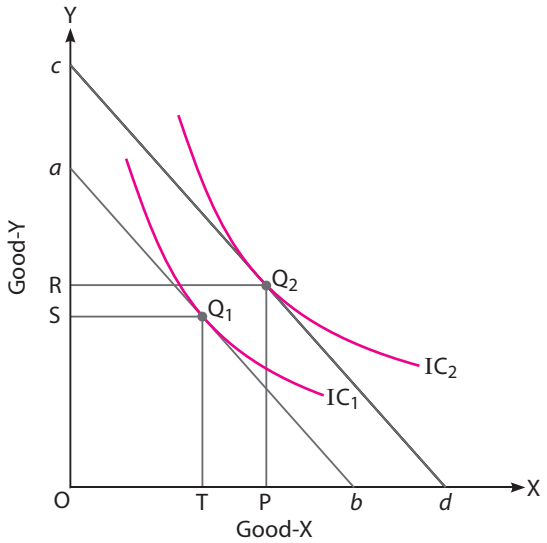

- बजट रेखा *ab* से *cd* की ओर खिसकती है (ध्यान रहे कि यह समांतर खिसकाव है)।
- संतुलन बिंदु Q_1 से Q_2 तक खिसकता है। उपभोक्ता अब दोनों वस्तुओं की अधिक मात्रा प्राप्त करता है। तदनुसार, उसके संतुष्टि स्तर में वृद्धि होती है।

2. उपभोक्ता का संतुलन तब प्राप्त होता है जब $P_X = MU_X$ (मुद्रा के रूप में) होता है। सरकार वस्तु-X की कीमत पर एक उच्चतम सीमा (Ceiling) लगा देती है जिससे कि उच्चतम कीमत संतुलन कीमत से कम हो जाती है। यह उपभोक्ता के संतुलन को किस प्रकार प्रभावित करेगा?

उत्तर: चित्र 4

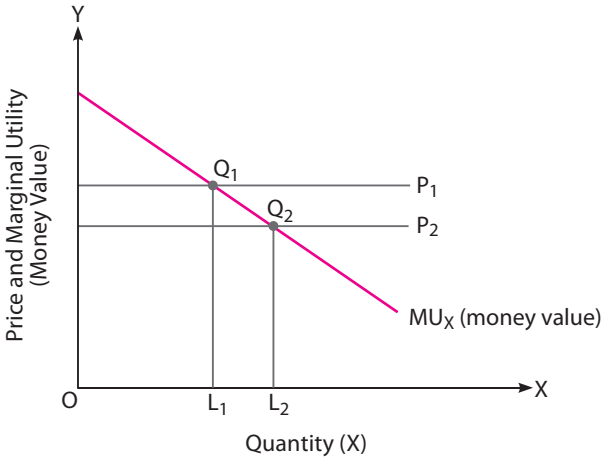

✦ उच्चतम सीमा के कारण कीमत P_1 से कम होकर P_2 हो जाती है। संतुलन Q_1 से Q_2 तक खिसकता है। वस्तु का उपभोग OL_1 से बढ़कर OL_2 हो जाता है। संतुष्टि स्तर में वृद्धि होती है, भले ही जब उपभोक्ता की आय स्थिर रहती है।

3. अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत में गिरावट के कारण घरेलू बाजार में डीजल की कीमत में काफी गिरावट हुई है। आप इस परिवर्तन को एक उपभोक्ता की बजट रेखा के संदर्भ में कैसे प्रतिबिंबित करेंगे जब वह अपनी दी हुई आय को वस्तु-X एवं वस्तु-Y पर खर्च करता है, जिसमें वस्तु-X डीजल है?

उत्तर: चित्र 5

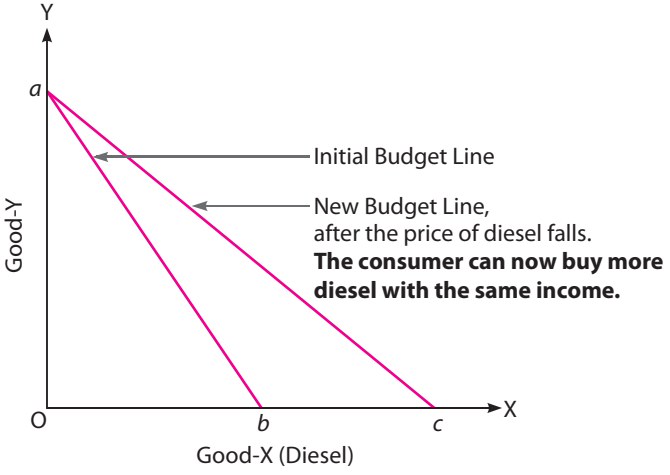

4. सरकार की भेदभावपूर्ण (Discriminatory) कर नीति के कारण भारतीय बाजार में वस्तु-X की कीमत वस्तु-Y की कीमत से अधिक कम हो गई। यह उपभोक्ता, जो कि अपनी आय को वस्तु-X एवं वस्तु-Y पर खर्च करता है, के संतुलन को कैसे प्रभावित करेगा?

उत्तर: एक उपभोक्ता अपना संतुलन प्राप्त करता है जबः

$$\frac{MU_X}{P_X} = \frac{MU_Y}{P_Y}$$

P_X, P_Y से अधिक गिरता है। इस प्रकार:

$$\frac{MU_X}{P_X} > \frac{MU_Y}{P_Y}$$

यह उपभोक्ता को कुछ व्यय वस्तु-Y से वस्तु-X की ओर परिवर्तित करने के लिए प्रेरित करेगा। जब वस्तु-X का उपभोग बढ़ता है, MU_X गिरेगा। दूसरी ओर, जब वस्तु-Y का उपभोग कम होता है, MU_Y बढ़ेगा। Y से X की ओर यह खिसकाव तब तक जारी रहेगा जब तक कि $\frac{MU_X}{P_X} = \frac{MU_Y}{P_Y}$ नहीं हो जाता।

5. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में प्रवाह के कारण, भारत में विनिर्माण क्षेत्र के उद्यमियों को लगता है कि उनके उत्पाद की लोच बढ़ गई है। भारत में विनिर्माण क्षेत्र में एक व्यक्तिगत फर्म के माँग वक्र के संदर्भ में आप इस परिवर्तन को किस प्रकार प्रतिबिंबित करेंगे?

उत्तर: फर्म का माँग वक्र (AR वक्र) अधिक लोचदार हो जाएगा जिसे चित्र 6 द्वारा प्रकट किया गया है।

चित्र 6

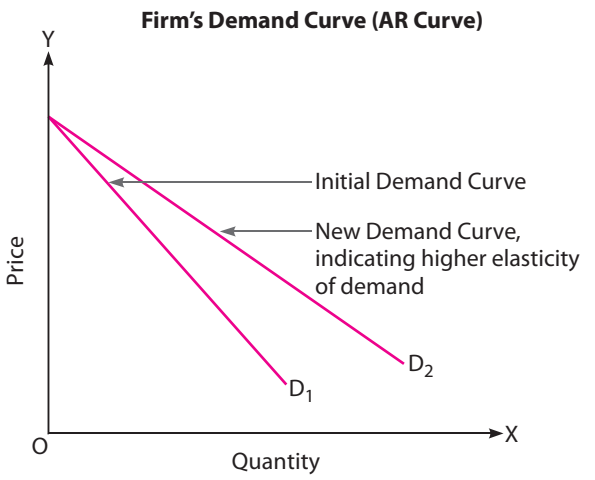

6. सरकार द्वारा घरेलू ऑटो सेक्टर को विदेशी निवेशकों के लिए खोले जाने के बाद हमें भारतीय अर्थव्यवस्था में बाजार की संरचना में किस प्रकार के परिवर्तन की आवश्यकता है?

उत्तर: घरेलू ऑटो सेक्टर को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए खोले जाने के बाद से अनेकों विदेशी कार कंपनियों ने भारत में अपनी उत्पादक इकाइयों को स्थापित किया है। इससे पहले, मुश्किल से 3 से 4 कंपनियाँ थीं जिनकी भारतीय कार बाजार पर उच्च एकाधिकारी शक्ति थी। अब प्रतिस्पर्धा में काफी वृद्धि हुई है। हालाँकि, अभी भी केवल कुछ ही बड़ी कंपनियाँ हैं जिनका संपूर्ण बाजार पर नियंत्रण है। **अल्पाधिकारी बाजार संरचना कायम है।** व्यक्तिगत फर्मों की **अधिक एकाधिकारी शक्ति से कम एकाधिकारी शक्ति का परिवर्तन किया गया है:** कीमत पर अधिक नियंत्रण से कीमत पर कम नियंत्रण।

7. निर्यात वस्तुओं के लिए दिया हुआ है कि $E_d < 1$, क्या आप यह सोचते हैं कि विनिमय दर में वृद्धि होने से भारत में निर्यात उद्योगों को लाभ मिलेगा?

उत्तर: जब विनिमय दर में वृद्धि होती है, हमारी करेंसी मूल्य में घटती है। विदेशी करेंसी के रूप में घरेलू वस्तुएँ सस्ती हो जाती हैं। परंतु जब माँग की लोच (हमारे निर्यातों के लिए) 'एक' से कम है तो वस्तु की कीमत में गिरावट होने से वस्तु पर किया जाने वाला कुल व्यय कम हो जाता है। तदनुसार, हमारे निर्यात उद्योग की राजस्व प्राप्तियाँ कम हो जाएँगी, जब निर्यात वस्तुओं की कीमत कम हो जाती है।

यूनिट-3

1. उत्पादन शुल्क में कटौती के कारण कारों की कीमत के कम होने से ऑटो उद्योग में एक कारक के प्रतिफल प्रभावित नहीं होते हैं। क्या आप इस बात से सहमत हैं?

उत्तर: कारों की कीमत कम होने का (उत्पादन शुल्क में कटौती के कारण) कारक के प्रतिफल से कोई लेना-देना नहीं है। कारक के प्रतिफल (बढ़ते, घटते अथवा ऋणात्मक प्रतिफल) साधारणतया उत्पादन में वृद्धि होने पर कारक अनुपात में परिवर्तन की प्रवृत्ति के कारण उत्पन्न होते हैं। अल्पकाल में, कुछ कारक स्थिर होते हैं। तदनुसार, कारक अनुपात अवश्य परिवर्तित होता है क्योंकि उत्पादन को केवल परिवर्ती कारक के आगत को बढ़ाकर ही बढ़ाया जा सकता है।

2. जब सरकार विदेशी विनिमय की दुर्लभता के कारण कुशल प्रौद्योगिकी के आयात की अनुमति नहीं देती है तो घरेलू उद्योग में कारक के प्रतिफल तेजी से गिरने शुरू हो जाते हैं। क्या आप इस बात से सहमत हैं?

उत्तर: यह सही है कि कारक के प्रतिफल तेजी से गिरने शुरू हो जाएँगे, यदि पुरानी प्रौद्योगिकी को अधिक कुशल प्रौद्योगिकी से बदला नहीं जाता है।

3. घरेलू अर्थव्यवस्था में एक खुदरा (Retail) फर्म का संतुलन उत्पादन किस प्रकार प्रभावित होगा जब खुदरा उद्योग में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा को बढ़ाता है तथा वस्तु की बाजार कीमत कम हो जाती है। मान लो कि वस्तु की कीमत पर एक व्यक्तिगत फर्म का कोई नियंत्रण नहीं है।

उत्तर: प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के कारण, घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ती है तथा वस्तु की बाजार कीमत कम हो जाती है। इसके कारण बाजार कीमत में P_1 से P_2 तक नीचे की ओर खिसकाव होता है जैसा कि चित्र 7 में दिखाया गया है। संतुलन बिंदु Q_1 से खिसककर Q_2 हो जाएगा। तदनुसार, फर्म का संतुलन स्तर OL_1 से कम होकर OL_2 हो जाएगा।

चित्र 7

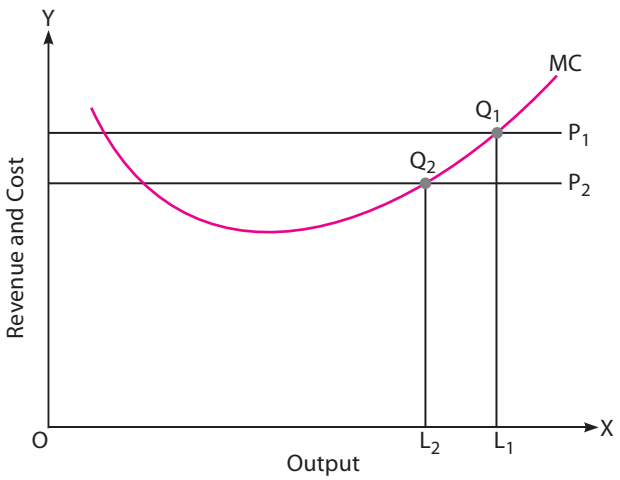

4. संतुलन उत्पादन के संदर्भ में पूर्ति की व्यष्टि अवधारणा कैसे पूर्ति की समष्टि अवधारणा से भिन्न है?

उत्तर: पूर्ति की व्यष्टि अवधारणा से अभिप्राय एक व्यक्तिगत फर्म या एक व्यक्तिगत उद्योग द्वारा वस्तु की नियोजित पूर्ति से है। दूसरी ओर, पूर्ति की समष्टि अवधारणा से अभिप्राय नियोजित समग्र पूर्ति से अथवा अर्थव्यवस्था में सभी उत्पादक इकाइयों द्वारा नियोजित पूर्ति से है।

5. AS के पूर्णतया लोचदार होने के कारण, AD में वृद्धि होने पर भी सामान्य कीमत स्तर स्थिर रहता है। क्या आप एक उद्योग के संदर्भ में 'स्थिर कीमत स्थिति' के बारे में सोच सकते हैं?

उत्तर: उद्योग की स्थिति में भी, बाजार पूर्ति वक्र पूर्णतया लोचदार हो सकता है, जैसा कि एक क्षैतिज सीधी रेखा पूर्ति वक्र द्वारा प्रकट होता है (चित्र 8)। ऐसी परिस्थिति में, वस्तु की बाजार कीमत प्रभावित नहीं होगी, बेशक माँग का स्तर कुछ भी हो।

चित्र 8

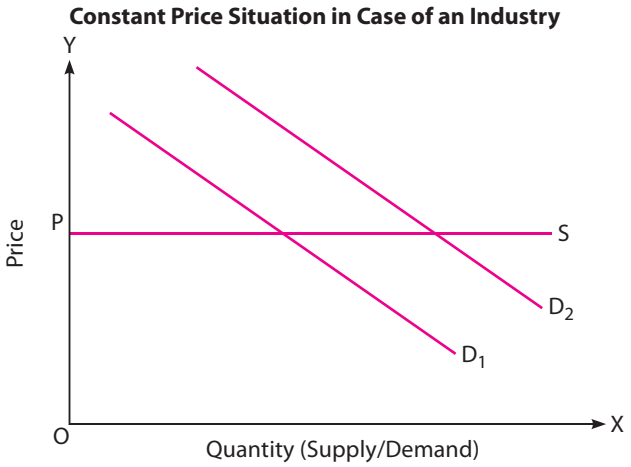

✦ बेशक माँग का स्तर कुछ भी हो, कीमत स्थिर रहती है।

यूनिट–4

1. एक उद्योग के संतुलन के संदर्भ में, कीमत तथा उत्पादन एक-साथ निर्धारित होते हैं। परंतु सकल घरेलू उत्पाद (GDP) संतुलन के संदर्भ में हम केवल उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करते हैं, कीमत पर नहीं। क्यों?

उत्तर: यह सही है कि संतुलन GDP के संदर्भ में, हम उत्पादन की मात्रा पर ध्यान केंद्रित करते हैं, कीमत स्तर पर नहीं। क्योंकि हम यह मान लेते हैं कि सामान्य कीमत स्तर स्थिर रहता है। सामान्य कीमत स्तर स्थिर रहता है क्योंकि समग्र पूर्ति (AS) पूर्णतया लोचदार होती है। समग्र पूर्ति (AS) पूर्णतया लोचदार होती है क्योंकि अर्थव्यवस्था में अतिरिक्त क्षमता विद्यमान होती है जैसा कि आर्थिक मंदी के दौरान होता है।

2. हम सकल घरेलू उत्पाद (GDP) संतुलन की चर्चा इस मान्यता पर करते हैं कि कीमत स्तर स्थिर है। इसके साथ, पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत, एक फर्म स्थिर कीमत स्तर का सामना करती है। क्या ये दोनों स्थितियाँ समान हैं?

उत्तर: नहीं, ये दोनों स्थितियाँ समान नहीं हैं। पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत एक फर्म स्थिर कीमत स्तर का सामना करती है क्योंकि उसका वस्तु की कीमत पर कोई नियंत्रण नहीं होता है। दूसरी ओर, संतुलन के संदर्भ में, समग्र पूर्ति के पूर्णतया लोचदार होने के कारण (अर्थव्यवस्था में अतिरिक्त क्षमता के विद्यमान होने के कारण) कीमत स्तर स्थिर रहता है।

3. समष्टि-अर्थशास्त्र में, AS को पूर्णतया लोचदार माना जाता है और इस प्रकार उत्पादन के संतुलन स्तर का प्रमुख निर्धारक AD हो जाता है। एक उद्योग के संतुलन उत्पादन के संबंध में हम ऐसी मान्यता क्यों नहीं बनाते हैं?

उत्तर: समष्टि-अर्थशास्त्र में, केन्ज ने अपनी चर्चा को आर्थिक मंदी की एक विशिष्ट स्थिति से संबंधित किया है। अतिरिक्त क्षमता का विद्यमान होना इस स्थिति का एक विशिष्ट लक्षण है। जो समग्र पूर्ति (AS) को अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार के बिंदु तक पूर्णतया लोचदार बनाती है। तदनुसार, समग्र माँग (AD) संतुलन उत्पादन के एक प्रमुख निर्धारक के रूप में उभरा है। व्यष्टि-अर्थशास्त्र में हम अतिरिक्त क्षमता की ऐसी किसी विशिष्ट स्थिति पर ध्यान केंद्रित नहीं करते हैं। तदनुसार, उद्योग का पूर्ति वक्र सामान्य आकार का लिया जाता है: यह बाएँ से दाएँ, ऊपर की ओर ढलवां होता है। [यहाँ, ध्यान दिया जाना चाहिए कि सामान्य स्थितियों में समग्र पूर्ति (AS) वक्र भी ऊपर की ओर ढलवां होगा।]

4. पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत एक व्यक्तिगत फर्म का माँग वक्र पूर्णतया लोचदार होता है। परंतु AD वक्र कभी-भी ऐसा नहीं होता है। कारण-आधारित उत्तर दें।

उत्तर: एक व्यक्तिगत फर्म (पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत) का माँग वक्र पूर्णतया लोचदार होता है। जो यह दर्शाता है कि एक व्यक्तिगत फर्म प्रचलित बाजार कीमत पर वस्तु की जितनी चाहे मात्रा बेच सकती है। इसका कारण यह है कि एक व्यक्तिगत फर्म द्वारा उत्पादित मात्रा **सदैव** ही बाजार पूर्ति का एक-छोटा घटक होता है। इस प्रकार एक फर्म द्वारा कितना भी उत्पादन क्यों न किया जाए, अन्य बातें समान रहने पर, यह बाजार कीमत को कभी-भी प्रभावित नहीं करता है। यह स्थिति हमें यह निष्कर्ष निकालने में सक्षम बनाती है कि एक व्यक्तिगत फर्म (पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत) प्रचलित कीमत पर वस्तु की जितनी चाहे मात्रा उत्पादित कर सकती है/बेच सकती है।

अथवा, एक व्यक्तिगत फर्म की वस्तु का माँग वक्र पूर्णतया लोचदार होता है। दूसरी ओर, समग्र माँग (AD) अर्थव्यवस्था में सभी वस्तुओं एवं सेवाओं की माँग का कुल जोड़ है। यह कभी-भी पूर्णतया लोचदार नहीं हो सकता है जब इसे समग्र व्यय के रूप में मापा जाता है तथा अर्थव्यवस्था में आय के स्तर से संबंधित किया जाता है।

यूनिट-5

1. जब प्रति व्यक्ति वास्तविक GDP बढ़ रहा है तो क्या इसका अर्थ यह है कि अर्थव्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति का कल्याण का स्तर बढ़ रहा है?

उत्तर: इसका उत्तर नहीं है। क्योंकि प्रति व्यक्ति परिवर्तन केवल औसत परिवर्तन को प्रकट करता है। यह आय के वितरण का स्पष्टीकरण देता है। यह संभव है कि वास्तविक GDP में वृद्धि हो, परंतु आय का वितरण अधिक विषम हो जाता है। अधिक GDP के लाभ निर्धन-से-निर्धन व्यक्तियों को नहीं पहुँच सकते हैं। यह अधिक लाभ के रूप में समाज के धनी वर्ग को प्राप्त हो सकते हैं। इस प्रकार जब औसत वास्तविक GDP में वृद्धि होती है तो यह अर्थव्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति के कल्याण स्तर में वृद्धि को प्रतिबिंबित नहीं कर सकता है।

2. अर्थव्यवस्था में उत्पादन करने वाली इकाइयों में से अधिकांश अपनी पूरी क्षमता से कम उत्पादन कर रही हैं। ऐसे परिदृश्य में, क्या अर्थव्यवस्था का संभावित GDP स्तर PPC पर किसी बिंदु द्वारा या इसके अंदर किसी बिंदु द्वारा निर्धारित होगा?

उत्तर: उत्पादन का संभावित स्तर सदैव PPC वक्र पर स्थित किसी बिंदु पर प्रकट होता है। क्योंकि उत्पादन का संभावित स्तर इस मान्यता पर आधारित होता है कि: (i) संसाधनों का पूर्ण प्रयोग होता है, (ii) संसाधनों का कुशल प्रयोग होता है तथा (iii) तकनीक स्थिर रहती है। जब अर्थव्यवस्था में अधिकांश उत्पादक इकाइयाँ अपनी पूर्ण क्षमता से कम उत्पादन करती हैं तो समष्टि स्तर पर इसका तात्पर्य संसाधनों की अतिरिक्त क्षमता या संसाधनों के अल्प-प्रयोग की स्थिति का होना है। जब संसाधनों का अल्प-प्रयोग होता है तो वास्तविक उत्पादन स्तर संभावित उत्पादन स्तर से कम होता है। इस प्रकार दी गई स्थिति में, संभावित स्तर नहीं, बल्कि वास्तविक उत्पादन स्तर PPC के अंदर किसी बिंदु द्वारा दर्शाया जाएगा।

3. सरकार की ओर से अंतरणों (Transfer) के कारण वैयक्तिक आय बढ़ जाती है। क्या इसका अर्थ यह है कि एक अर्थव्यवस्था में प्रत्येक परिवार को निम्न-कोटि की वस्तुओं का उपभोग कम कर देना चाहिए?

उत्तर: वैयक्तिक आय एक समष्टि अवधारणा है। इससे अभिप्राय एक लेखा वर्ष की अवधि के दौरान अर्थव्यवस्था में सभी व्यक्तियों तथा परिवारों की आय से है। वैयक्तिक आय में वृद्धि (सरकार से प्राप्त अंतरणों के कारण) का तात्पर्य व्यक्तियों तथा परिवारों की समग्र आय में वृद्धि से है। तथापि इसका अर्थ यह नहीं है कि सरकार से प्राप्त अंतरण देश में प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त होते हैं। **उदाहरण:** सरकार वृद्धावस्था पेंशन के माध्यम से केवल वरिष्ठ नागरिकों को अंतरण प्रदान कर सकती है। यह अंतरण देश में प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त नहीं होते हैं। तदनुसार, यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि वैयक्तिक आय में वृद्धि (सरकारी अंतरणों के कारण) होने के कारण अर्थव्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति (या प्रत्येक परिवार) की आय में वृद्धि नहीं हो सकती है। अतः ऋणात्मक आय प्रभाव का सिद्धांत (आय के स्तर में वृद्धि के कारण निम्न-कोटि वस्तुओं के उपभोग में कमी) अर्थव्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति (या प्रत्येक परिवार) पर लागू नहीं हो सकता है।

4. प्रत्यक्ष व्यक्तिगत करों में पर्याप्त कटौती से व्यक्तिगत प्रयोज्य आय बढ़ जाती है। क्या इसका अर्थ यह है कि अर्थव्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति ज्यादा बचत कर सकता है? पूर्णतया प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में यह फर्म के माँग वक्र को किसी प्रकार प्रभावित करेगा?

उत्तर: व्यक्तिगत प्रयोज्य आय एक समष्टि अवधारणा है। इससे अभिप्राय अर्थव्यवस्था में सभी व्यक्तियों तथा परिवारों की आय से है। प्रत्यक्ष व्यक्तिगत करों में पर्याप्त कटौती के कारण व्यक्तिगत प्रयोज्य आय में वृद्धि होती है जो अर्थव्यवस्था में व्यक्तियों तथा परिवारों की प्रयोज्य आय का समुच्चय है। इसका तात्पर्य कभी भी यह नहीं है कि अर्थव्यवस्था में प्रत्येक परिवार की व्यक्तिगत आय में वृद्धि होनी चाहिए। क्योंकि अनेकों व्यक्ति तथा परिवार करों का भुगतान नहीं कर सकते हैं क्योंकि उनकी आय पहले से ही कर-योग्य स्तर से कम होती है। प्रत्यक्ष व्यक्तिगत करों में कटौती के कारण ऐसे व्यक्तियों की बचत करने की क्षमता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। तदनुसार, यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि प्रत्यक्ष व्यक्तिगत करों में कटौती का तात्पर्य कभी-भी यह नहीं होता है कि अर्थव्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति अधिक बचत कर सकता है।

पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत व्यक्तिगत प्रयोज्य आय में वृद्धि से फर्म का माँग वक्र प्रभावित नहीं होगा। क्योंकि पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत फर्म का माँग वक्र सदैव ही पूर्णतया लोचदार होता है। यह अर्थव्यवस्था में आय स्तर के कारण नहीं होता है। परंतु, क्योंकि परिभाषा से ही, पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत एक फर्म दी हुई बाजार कीमत पर जितनी चाहे मात्रा बेच सकती है। यह साधारणतया कीमत स्वीकारक (Price Taker) होती है।

5. क्या आपको लगता है कि डीजल की कीमत में पर्याप्त गिरावट से भारत में सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का स्तर किसी भी तरह प्रभावित होगा?

उत्तर: डीजल की कीमत में पर्याप्त गिरावट के कारण ऐसी उत्पादक इकाइयों की उत्पादन लागत में कमी आती है जहाँ डीजल एक महत्त्वपूर्ण आगत के रूप में प्रयोग होता है। इस स्थिति में परिवहन उद्योग एक सर्वोतम उदाहरण है। डीजल की कीमत में गिरावट के कारण परिवहन लागत कम हो जाती है। इसके व्यापक प्रभाव होते हैं। क्योंकि अर्थव्यवस्था में अधिकांश विनिर्माण इकाइयाँ आगतों के साथ-साथ उत्पादन की पूर्ति के लिए भी परिवहन पर निर्भर करती हैं। परिवहन की कम लागत उत्पादन के उच्च स्तर को प्रेरित करती है। यदि ऐसा होता है तो GDP स्तर में निश्चित रूप से वृद्धि होगी।

यूनिट-6

1. वाणिज्यिक बैंकों की माँग जमाओं पर वैधानिक तरलता अनुपात (Statutory Liquidity Ratio–SLR) को भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने 22% से घटाकर 21.5% कर दिया है। यह किस प्रकार आवासीय अपार्टमेंट में माँग को प्रभावित करेगा?

उत्तर: SLR (वैधानिक तरलता अनुपात– माँग जमाओं के प्रतिशत के रूप में) में कटौती वाणिज्यिक बैंकों को अपनी तरल परिसंपत्तियों की एक दी हुई मात्रा से अधिक साख सृजित करने का अवसर प्रदान करता है। तदनुसार, साख की उपलब्धता में विस्तार की प्रवृत्ति होती है। साख की आसान उपलब्धता से आवासीय अपार्टमेंट में निवेश के उद्देश्य के लिए इसकी माँग में वृद्धि होती है। जब बैंकों की साख सृजन क्षमता में विस्तार होता है तो बैंक (जो वित्तीय बाजार प्रतिस्पर्धा में कार्य करते हैं) ब्याज दर को कम कर सकते हैं। यह निवेशकों को आवासीय अपार्टमेंट के लिए उधार लेने के लिए और प्रोत्साहित करेगा। अतः SLR में कटौती के परिणामस्वरूपः (i) बाजार में साख पूर्ति में विस्तार तथा (ii) ब्याज की कम दर के कारण आवासीय अपार्टमेंट की माँग में वृद्धि होती है।

2. हाल ही में भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने रेपो दर को 8% से कम करके 7.75% करने की घोषणा की है। यह भारत में कार बाजार को कैसे प्रभावित करेगा?

उत्तर: रेपो दर में कटौती वाणिज्यिक बैंकों को कम ब्याज दर पर भारतीय रिजर्व बैंक से ऋण लेने के लिए सक्षम करते हैं। इसके कारण ब्याज की ब्याज दर (वह दर जिस पर वाणिज्यिक बैंक सामान्य जनता को ऋण प्रदान करते हैं) में कटौती होती है। कम ब्याज दर का अर्थ ऋण की एक दी हुई मात्रा के लिए कम EMI (वार्षिक मासिक किस्त) है। तदनुसार, कार जैसी टिकाऊ वस्तुओं की खरीद के लिए साख की माँग में वृद्धि होती है। माँग में वृद्धि के कारण कार उद्योग में और अधिक निवेश करने को प्रोत्साहन मिलता है। उत्पादन क्षमता में वृद्धि होगी। यदि कार उद्योग में अतिरिक्त क्षमता विद्यमान है तो यह समाप्त हो जाएगी। किसी भी स्थिति में, कार उद्योग में विस्तार होगा।

3. सस्ती मौद्रिक नीति भारतीय बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण को कैसे प्रभावित करेगी?

उत्तर: सस्ती मौद्रिक नीति वह नीति है जो कम ब्याज दर पर साख की उपलब्धता को अधिक सुविधाजनक बनाती है। ब्याज की बाजार दर में कमी के कारण निवेश की लागत में कटौती होती है। तदनुसार, निवेश में वृद्धि की प्रवृत्ति पाई जाती है। व्यष्टि-अर्थशास्त्र हमें यह सिखाता है कि निवेश सदैव उन उत्पादन गतिविधियों में संचालित किया जाता है जो अतिरिक्त सामान्य लाभ अर्जित करती हैं। जब नई फर्में ऐसे उद्योगों (जो असामान्य लाभ अर्जित करते हैं) में प्रवेश करती हैं तो प्रतिस्पर्धा उत्पन्न होती है। प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण का फैलाव/विस्तार होता है। अतिरिक्त सामान्य लाभ कम हो जाते हैं या समाप्त हो जाते हैं। कम कीमत पर अधिक उत्पादन उपलब्ध होता है। यह आर्थिक विस्तार की स्थिति है, इसका अर्थ है संपूर्ण अर्थव्यवस्था की संवृद्धि तथा विकास।

4. मुद्रा को विनिमय के माध्यम के रूप में प्रस्तुत करने से अर्थशास्त्रियों को उपयोगिता विश्लेषण के संदर्भ में उपभोक्ता संतुलन का वर्णन करने में सहायता मिली है। आप इस तथ्य की किस प्रकार व्याख्या करते हैं?

उत्तर: यह सही है कि मुद्रा के विकास से अर्थशास्त्रियों को उपयोगिता विश्लेषण के संदर्भ में उपभोक्ता संतुलन का वर्णन करने में सहायता मिली है। उपभोक्ता अपना संतुलन प्राप्त करता है जबः

$$\frac{MU_X}{P_X} = MU_M$$

↑ एक रुपये मूल्य के बराबर की संतुष्टि जो उपभोक्ता वास्तव में प्राप्त करता है

↑ एक रुपये मूल्य के बराबर की संतुष्टि जो उपभोक्ता प्राप्त करने की इच्छा करता है

उस स्थिति की कल्पना कीजिए जब मूल्य की एक सामान्य इकाई के रूप में मुद्रा उपलब्ध नहीं है। ऐसी स्थिति में अर्थशास्त्रियों के लिए उपभोक्ता संतुलन के समीकरण को लिखना बेहद मुश्किल होगा। एक वस्तु की कीमत को दूसरी वस्तु (जिसका विनिमय में त्याग किया

जाता है) की मात्रा के रूप में अभिव्यक्त किया जाएगा तथा MU_M के लिए मात्रात्मक अभिव्यक्ति को ज्ञात करना बेहद मुश्किल हो जाएगा (जब मुद्रा विद्यमान नहीं होती है)। कुछ वस्तुएँ मुद्रा के स्थान पर मूल्य की सामान्य इकाई के रूप में बिना सोचे-समझे प्रयोग की जाएगी। परंतु उस वस्तु का चयन व्यक्ति से व्यक्ति बदलता जाएगा। शायद उपभोक्ता संतुलन की अभिव्यक्ति बीजगणितीय समीकरण के रूप में कभी-भी संभव नहीं होगी।

5. 'प्रत्येक परिवार के लिए बैंक खाता' को भारत में बहुत अधिक प्रतिक्रिया (Response) **मिली है। निम्नलिखित पर इसके प्रभाव का विश्लेषण करें: (i) वाणिज्यिक बैंकों द्वारा साख निर्माण, एवं (ii) घरेलू बाजार में उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं की माँग।**

उत्तर: 'प्रत्येक परिवार के लिए बैंक खाता' हाल ही में भारत सरकार द्वारा शुरू की गई 'जन-धन-योजना' का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। यह शून्य शेष खाता की सुविधा तथा डेबिट कार्ड की सुविधा के साथ-साथ खाताधारक को जीवन बीमा सुरक्षा (₹ 2 लाख का) की भी सुविधा प्रदान करता है। देश में लाखों परिवारों ने इस सुविधा का लाभ उठाया है। **इस तथ्य का महत्त्व यह है कि जन-धन-योजना ने देश में सीमांत बचत करने वालों के द्वारा हजारों करोड़ की नकद जमाओं को आकर्षित किया है।** इससे वाणिज्यिक बैंकों की प्राथमिक जमाओं में वृद्धि हुई है। इन प्राथमिक जमाओं (नकद जमाओं) के आधार पर बैंक द्वितीयक जमाओं का निर्माण करने में सक्षम होते हैं। **नकद जमाओं में विस्तार के कारण वाणिज्यिक बैंकों की साख सृजन क्षमता में विस्तार हुआ है।**

दूसरा, जन-धन-योजना ने देश में वित्तीय समावेशनों की सीमा में विस्तार किया है। अधिक-से-अधिक लोग वित्तीय बाजारों से जुड़ रहे हैं। इससे उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं की खरीद के लिए साख की माँग में वृद्धि होने की संभावना होती है। इसका निहितार्थ है कि **घरेलू बाजार में उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं के लिए माँग में वृद्धि होने की संभावना होती है।**

यूनिट-7

1. 'माँग-पूर्ति समानता' समष्टि संतुलन के साथ-साथ व्यष्टि संतुलन को भी निर्धारित करती है। तो फिर अंतर कहाँ पर है? समझाएँ।

उत्तर: यह सही है कि माँग-पूर्ति समानता समष्टि संतुलन के साथ-साथ व्यष्टि संतुलन को भी निर्धारित करती है। फिर भी एक महत्त्वपूर्ण अंतर है। व्यष्टि स्तर पर, हम बाजार में एक व्यक्तिगत उद्योग या एक व्यक्तिगत वस्तु से संबंधित माँग-पूर्ति पर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं। **उदाहरण:** व्यष्टि संतुलन तब प्राप्त होता है जब चीनी के लिए माँग चीनी की पूर्ति के बराबर होती है तथा चीनी के लिए बाजार में संतुलन होता है। दूसरी ओर, समष्टि संतुलन समग्र पूर्ति तथा समग्र माँग पर ध्यान केंद्रित करता है। समग्र पूर्ति से अभिप्राय अर्थव्यवस्था में सभी वस्तुओं एवं सेवाओं की पूर्ति से है, जिसकी एक लेखा वर्ष की अवधि के दौरान उत्पादक योजना बनाते हैं। समग्र माँग से अभिप्राय अर्थव्यवस्था में सभी वस्तुओं एवं सेवाओं की माँग से है, जिसकी एक लेखा वर्ष की अवधि के दौरान क्रेता योजना बनाते हैं।

जब व्यष्टि संतुलन स्थापित होता है तो संतुलन कीमत तथा संतुलन मात्रा दोनों एक-साथ निर्धारित होते हैं। जब समष्टि संतुलन स्थापित होता है तो हम केवल GDP संतुलन ज्ञात करते हैं। [विद्यार्थियों को यह ध्यान रखने के लिए परामर्श दिया जाता है कि +2 स्तर पर, समष्टि संतुलन का अध्ययन इस मान्यता के संदर्भ में किया जाता है कि कीमत स्तर स्थिर रहता है।]

2. भारत में मोटे अनाज (Coarse Grain) **की माँग पर 'स्फीतिक अंतराल' के शृंखला प्रभाव** (Chain Effect) **का विश्लेषण करें।**

उत्तर: स्फीतिक अंतराल से अभिप्राय उस स्थिति से है जब AD > AS (अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार स्तर के अनुरूप)। यह वह स्थिति है जब वस्तुएँ एवं सेवाओं की कीमतें ऊपर उठना शुरू हो जाती है तथा अर्थव्यवस्था में वस्तुओं एवं सेवाओं की पूर्ति स्थिर रहती है।

सामान्य कीमत स्तर में वृद्धि लोगों की वास्तविक आय को कम कर देती है। यह अधिकतर सीमांत क्रेताओं को प्रभावित करती है जो अपनी आय का एक बड़ा भाग जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं (भोजन, कपड़ा तथा मकान) पर खर्च करते हैं। उनकी वास्तविक आय में कमी होने के कारण ऐसे क्रेताओं के उच्च किस्म के अनाज के उपभोग से मोटे अनाज के उपभोग की ओर विवर्तित होने की संभावना होती है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि सामान्य कीमत स्तर में वृद्धि की स्थिति में (स्फीतिक अंतराल के अनुरूप) मोटे अनाज के लिए माँग में वृद्धि की संभावना होती है। यह परिवार की आय तथा निम्नकोटि वस्तु की माँग के बीच विपरीत संबंध को स्थापित करता है।

3. अवस्फीतिक अंतराल का सामना करने के लिए सरकार स्वायत्त निवेश की योजना बनाती है। यह कैसे भारत में सीमेंट एवं स्टील उद्योगों की माँग को प्रभावित करेगा?

उत्तर: अवस्फीतिक अंतराल से अभिप्राय समग्र माँग की न्यूनता की स्थिति से है, जिसके कारण अर्थव्यवस्था में अल्परोजगार या बेरोजगारी होती है। ऐसी स्थितियों के कारण निजी निवेश का अकाल पड़ जाता है साधारणतया क्योंकि वस्तुओं एवं सेवाओं की माँग का अर्थव्यवस्था में अभाव उत्पन्न हो जाता है। अर्थव्यवस्था 'निम्न स्तरीय संतुलन जाल' में चली जाती है। इस संकट को तोड़ने के लिए सरकार स्वायत्त निवेश के माध्यम से उत्पादन गतिविधि में हस्तक्षेप करती है। यह निवेश अर्थव्यवस्था में आधारिक संरचना की सुविधाओं के सृजन पर ध्यान केंद्रित करता है, जिससे कि निजी निवेश प्रोत्साहित हो सके। आधारिक संरचना की सुविधाओं का मूल घटक सड़कों, बाँधों तथा पुलों से संबंधित है। ये वे उत्पादन क्षेत्र हैं जहाँ स्टील एवं सीमेंट प्रमुख आगतों के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। अतः हम निष्कर्ष निकालते हैं कि सरकार द्वारा किए स्वायत्त निवेश (जो कि सड़कों, बाँधों तथा पुलों के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करता है) के कारण देश में स्टील एवं सीमेंट के लिए माँग में वृद्धि की संभावना होती है।

यूनिट-8

1. कच्चे तेल की कीमत में महत्त्वपूर्ण गिरावट से भारत सरकार को अपना चालू खाता घाटा (CAD) के साथ-साथ वित्तीय घाटा सुधारने में सहायता मिली है। कैसे, वर्णन करें।

उत्तर: (i) कच्चे तेल की कीमत में महत्त्वपूर्ण गिरावट से चालू खाता घाटा (CAD) में सुधार करने में सहायता मिली है। क्योंकि कच्चे तेल की कीमत में गिरावट के कारण हमारे आयात बिल में कमी होती है।

(ii) कच्चे तेल की कीमत में महत्त्वपूर्ण गिरावट से भारत सरकार को अपने वित्तीय घाटे को सुधारने में भी सहायता मिली है। क्योंकि तेल कीमत में गिरावट इतनी पर्याप्त हुई है कि इससे सरकार तेल पर आयात शुल्क को बढ़ाने में सक्षम हो जाती है, बेशक जब पेट्रोल/डीजल की कीमत घरेलू बाजार में गिर जाती है। कर राजस्व में वृद्धि के कारण वित्तीय घाटे में सुधार होता है।

2. उच्च राजकोषीय घाटा व्यष्टि-स्तर पर उद्योग के प्रदर्शन (निष्पादन) को कैसे प्रभावित करता है? व्याख्या कीजिए।

उत्तर: उच्च राजकोषीय घाटा व्यष्टि स्तर पर उद्योग के प्रदर्शन (निष्पादन) को दो तरीकों से प्रभावित करता है जो इस प्रकार हैः

(i) उच्च राजकोषीय घाटे के कारण सरकार द्वारा अधिक उधार लिया जाता है। जब सरकार ऋणयोग्य कोषों की विशाल मात्रा उधार लेती है तो निजी निवेशकों के लिए कोषों की उपलब्धता कम हो जाती है। इसे क्राउडिंग-आउट (Crowding-out) कहते हैंः निजी निवेशकों के लिए वित्तीय संकट (Financial Crunch) की एक स्थिति। क्राउडिंग-आउट व्यष्टि स्तर पर फैलता (विस्तार) है। यह विशेषतया ऐसे उद्योग के निष्पादन को बाधा पहुँचाता है जिसमें गहन निवेश की आवश्यकता होती है; जैसे- ऑटो उद्योग।

(ii) सरकार द्वारा ऋणयोग्य कोषों के लिए अधिक माँग के कारण ब्याज की बाजार दर में वृद्धि होती है। यह व्यक्तिगत निवेशक के लिए निवेश उद्देश्य के लिए ऋण लेने में निवारक की भूमिका निभाता है। यह व्यष्टि स्तर पर उद्योग के निष्पादन को और हानि पहुँचाता है।

3. संसाधनों के आबंटन पर सरकार की बजटीय नीति के प्रभाव को समझाएँ।

उत्तर: कर तथा आर्थिक सहायता सरकार की बजटीय नीति के दो मुख्य प्राचल हैं। इन प्राचलों में परिवर्तन करके सरकार संसाधनों के आबंटन को प्रभावित करने का प्रयास करती है। उत्पादन के उन क्षेत्रों में (जैसे- तंबाकू तथा शराब) उत्पादन शुल्क को बढ़ाया जाता है जहाँ सरकार संसाधनों के आबंटन में कटौती करना चाहती है। उत्पादन शुल्क में वृद्धि के कारण उत्पादन की लागत में वृद्धि होती है। इसके कारण नियोजित उत्पादन या संसाधनों के नियोजित आबंटन में कटौती होती है।

दूसरी ओर, आर्थिक सहायता उन उत्पादन क्रियाओं (जैसे- बीज तथा रसायन) के लिए प्रदान की जाती है जहाँ सरकार संसाधनों के अधिक आबंटन के लिए इच्छुक है। आर्थिक सहायता उत्पादन की लागत को कम करती है और इस प्रकार अधिक निवेश को प्रेरित करती है।

यह ध्यान देने वाली महत्त्वपूर्ण बात है कि सरकार की कर तथा आर्थिक सहायता नीति का प्रयोग संसाधनों के आबंटन को इस प्रकार प्रभावित करने के लिए किया जाता है जिससे कि सामाजिक कल्याण को बढ़ाया जा सके।

4. एक पूर्णतया प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में कैसे उत्पादन शुल्क में परिवर्तन एक फर्म के उत्पादन के संतुलन स्तर को प्रभावित करता है?

उत्तर: उत्पादन शुल्क में परिवर्तन का अर्थ है कि या तो इसे बढ़ाया जाए या इसे घटाया जाए। जब उत्पादन शुल्क को बढ़ाया जाता है तो उत्पादन की लागत में भी वृद्धि होती है। कीमत के स्थिर रहने पर (जैसा कि पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत) अधिक लागत के कारण फर्म के संतुलन उत्पादन में कटौती होगी। दूसरी ओर, उत्पादन शुल्क में कटौती के कारण उत्पादन की लागत में कमी होती है। कीमत के स्थिर रहने पर, इसके कारण उत्पादन के संतुलन स्तर में वृद्धि होगी। चित्र 9 इन स्थितियों का वर्णन करता है।

चित्र 9

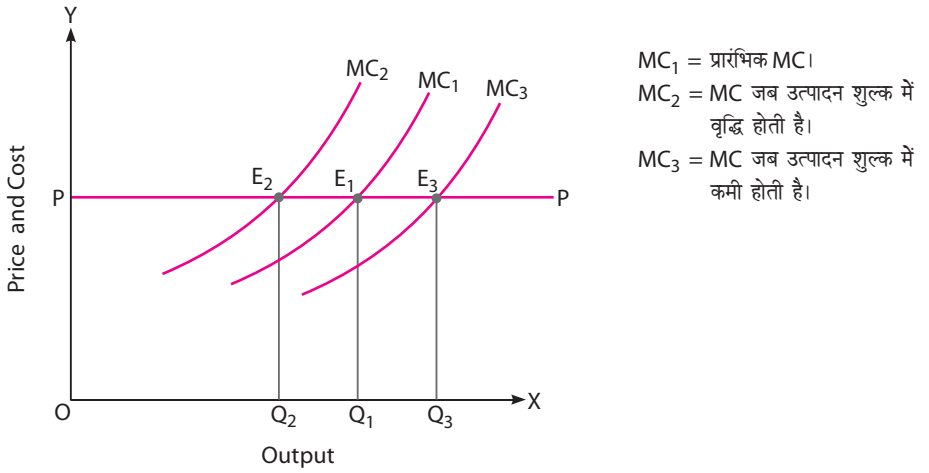

हम जानते हैं कि, संतुलन प्राप्त होता है जब (i) MC = MR तथा (ii) MC बढ़ रही है।

(i) **आरंभ** में, फर्म MC_1 पर बिंदु E_1 पर संतुलन में है।

संतुलन उत्पादन = OQ_1।

(ii) जब उत्पादन शुल्क को बढ़ाया जाता है, MC वक्र ऊपर की ओर खिसक जाता है। यह अब MC_2 द्वारा प्रकट होता है। संतुलन MC_2 पर बिंदु E_2 पर प्राप्त होता है।

संतुलन उत्पादन = OQ_2 (इसमें कमी होती है)।

(iii) जब उत्पादन शुल्क में कमी होती है, MC वक्र नीचे की ओर खिसक जाता है। यह अब MC_3 द्वारा प्रकट होता है। संतुलन MC_3 पर बिंदु E_3 पर प्राप्त होता है।

संतुलन उत्पादन = OQ_3 (इसमें वृद्धि होती है)।

5. ऐसी स्थिति की कल्पना करें जिसमें घरेलू एल०पी०जी० (LPG) पर नकद आर्थिक सहायता (Cash Subsidy) को हटा लिया गया हो। निर्धनता रेखा से नीचे (BPL) रहने वाले एक औसत परिवार पर इसके प्रभाव को समझाएँ। IC रेखाचित्र का प्रयोग करें।

उत्तर: जब एल०पी०जी० पर नकद आर्थिक सहायता को हटा लिया जाता है तो निर्धनता रेखा से नीचे रहने वाले परिवार की प्रयोज्य आय कम हो जाती है। तटस्थता वक्र विश्लेषण के संदर्भ में, इसका अर्थ होगा निर्धनता रेखा से नीचे रहने वाले औसतन परिवार की बजट रेखा में बाईं ओर खिसकाव होना। अन्य बातों के समान रहने पर, इसके कारण उनके कल्याण स्तर में कटौती होगी। इसकी व्याख्या चित्र 10 के माध्यम से की गई है।

चित्र 10

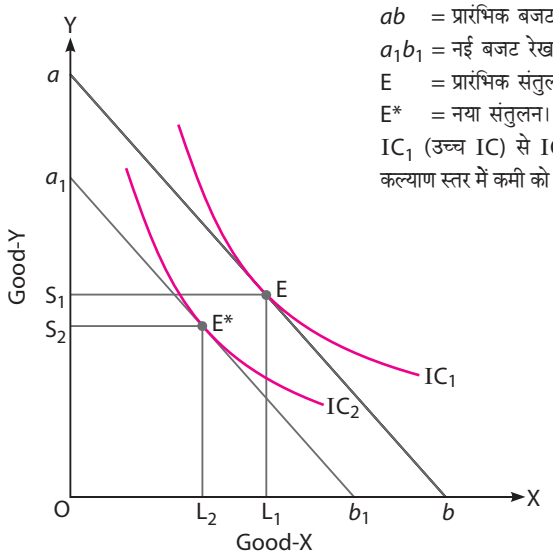

ab = प्रारंभिक बजट रेखा।
a_1b_1 = नई बजट रेखा।
E = प्रारंभिक संतुलन।
E* = नया संतुलन।
IC_1 (उच्च IC) से IC_2 (निम्न IC) की ओर खिसकाव कल्याण स्तर में कमी को प्रकट करता है।

आरंभ में निर्धनता रेखा से नीचे रहने वाला परिवार IC_1 पर बिंदु E पर संतुलन में है।

वह वस्तु-X की OL_1 मात्रा तथा वस्तु-Y की OS_1 मात्रा का उपभोग करता है।

नकद आर्थिक सहायता के हटाए जाने के पश्चात बजट रेखा *ab* से a_1b_1 नीचे की ओर खिसकती है।

नया संतुलन IC_2 पर बिंदु E^* पर प्राप्त होता है। निम्न IC पर होने के कारण निर्धनता रेखा से नीचे रहने वाले परिवार के कल्याण स्तर में भी कमी होती है। अब वह वस्तु-X की OL_2 मात्रा तथा वस्तु-Y की OS_2 मात्रा उपभोग करता है।

यूनिट-9

1. घरेलू मुद्रा के मूल्यह्रास की स्थिति में, कैसे एक फर्म शेष विश्व से कच्चे माल की खरीद पर अपने बजट को पुन:आबंटित करेगी?

उत्तर: जब घरेलू मुद्रा का मूल्यह्रास होता है तो इसका तात्पर्य है कि विदेशी मुद्रा (जैसे- यू०एस० डॉलर) की एक इकाई खरीदने के लिए अधिक रुपयों का भुगतान किया जाता है। तदनुसार, शेष बाजार से कच्चे माल की एक दी हुई मात्रा को खरीदने के लिए रुपये के भुगतान में वृद्धि होगी। इससे फर्म विदेशी बाजार की अपेक्षा घरेलू बाजार से अधिक खरीददारी करने के लिए प्रोत्साहित होगी। इसका निहितार्थ है कि फर्म अब शेष विश्व से कच्चे माल को खरीदने के लिए कम बजट का आबंटन करेगी।

2. फर्म X वस्तुओं का आयात केवल घरेलू बाजार में पुन: बिक्री के लिए करती है। घरेलू मुद्रा की मूल्यवृद्धि कैसे उसकी घरेलू बिक्री को प्रभावित करेगी?

उत्तर: घरेलू मुद्रा की मूल्यवृद्धि का तात्पर्य है कि विदेशी मुद्रा की एक इकाई अब पहले की तुलना में कम रुपयों का भुगतान करके खरीदी जा सकती है। तदनुसार, फर्म अब पहले की तुलना में कम रुपयों का भुगतान करके वस्तुओं का आयात कर सकती है। इसके कारण आयातों के एक दिए हुए परिमाण के लिए आयात बिल (रुपयों के रूप में) में कटौती होती है। फर्म अब घरेलू बाजार में कम कीमत पर अपनी वस्तुएँ बेचने में समर्थ हो सकती है। **इससे उसकी घरेलू बिक्री के प्रोत्साहित होने की संभावना होती है।**

3. जब अमेरिकी डॉलर के संबंध में रुपए के मूल्य में वृद्धि होती है तो अमेरिकी विश्वविद्यालयों में शिक्षा की माँग बढ़ जाती है। क्या आप इस परिवर्तन को माँग वक्र पर संचलन के रूप में देखेंगे या माँग वक्र के स्थानांतरण के रूप में?

उत्तर: यह सही है कि जब अमेरिकी डॉलर के संबंध में रुपये के मूल्य में वृद्धि होती है तो अमेरिकी विश्वविद्यालय में शिक्षा की माँग बढ़ जाती है। क्योंकि अमेरिकी मुद्रा (जिसकी शिक्षा के लिए आवश्यकता होती है) की एक दी हुई मात्रा को अब कम रुपयों का भुगतान करके खरीदा जा सकता है। **इस प्रकार के परिवर्तन को माँग वक्र के स्थानांतरण के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।** भारतीय विद्यार्थियों के लिए, अमेरिकी शिक्षा की कीमत भारतीय मुद्रा के रूप में कम हो जाती है; तदनुसार, माँग का विस्तार होता है। हम जानते हैं कि वस्तु की अपनी कीमत में परिवर्तन की प्रतिक्रियास्वरूप माँग में किसी भी परिवर्तन को माँग वक्र पर संचलन के रूप में प्रतिबिंबित किया जाता है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि भारतीय मुद्रा की मूल्यवृद्धि की प्रतिक्रियास्वरूप अमेरिकी शिक्षा की माँग में वृद्धि को माँग वक्र पर संचलन के रूप में देखा जाता है।